ANAND KUSHWAHA

(R. Ramanand)

Pacifist, Poet and Critic

From attempted literary career in the early seventies via a decadelong academic activism in the post-emergency period to developing a firm commitment to freethinking and peace-objectives in the mid-eighties, Anand Kushwaha has never abandoned hopes for humanity. In the subsequent phase, he has sought to relate to the contemporary world in more general terms of marxisant social theory and pacifist goals.

With criticism and poetry as primary interest, he depends on pressrelated (editing/translation etc) work and irregular teaching assignments.

His work includes. 1. Book-Reviews and comments on issues of interest 2. Aspects of a Critique of Contemporaneity (Remarks 1988-97), 3. Prashnashesh Panchaya (poems 2003-10), limited circulation in 3 parts Athva Jean Genet Parhen, Akelapan Vahi Ab Bhi and Shesh Prashna Prati Prashna), 4. Shiksharth Prakash (poster-poems 2003-07), 5. Social Action Idea Ventures: Mukhyadhara, Vigyan Samachar (1970-74),

सर्व समीक्षा संकट की या आपत्काल अभिव्यक्ति,
सको जड़ से नकलता है फिर लेकर पुनर्निर्भान्ति !

Hundred Flowers (1977-80), Locus/New locus (1980-83) Purpose/Navadarsh (2003-07) Differentiated Students (2006--)

b. 19-1752 Azamgarh

Special Interest Education & Society

- Autobiographical Notes
- हम मनुष्यता की आशा में
  Hopes Aligned with those of the Humanity
  Poems 2017-20 कविताएं

शिक्षार्थ-प्रकाश

पोस्टर कविताएं

(2003–2007)

आनन्द कुशवाहा

Scanned with CamScanner

शिक्षार्थ–प्रकाश

पोस्टर कविताएं

(2003-2007)

आनन्द कुशवाहा

Scanned with CamScanner

विगत नहीं
साम्राज्यवाद,
वह है
अब भी अवशेष।
उसकी ही तो
संस्कृति-
ध्वनि हैं
शिक्षा और निवेश!

शिक्षा का स्वरूप
क्या हो ?
यह सामान्य
प्रश्न ही
कार्ल मार्क्स के
समक्ष था,
और कालपुरुष
के अब भी!

मॉडल-सोशल
न कोई है
सोशल सांईस
डेरिवेटिव,
डेरिवेटिव-
पेडागॉजी
के प्रति हम
इंट्रोगेटिव!

रामभक्ति का
प्रमाद क्यों हो ?
प्रमाद भी क्यों
विरोधिता में ?
सेक्यूलरकल्चर
दिखती है
कुछ-कुछ
शिक्षाविरोधिता में!

Exhibition, Education and Freethinking, 2003

प्रश्न प्रमुख अपने सम्मुख है
साइंस-और-लर्निंग का।

इसी लक्ष्य से रहे खोजते
हम प्वाइंट टर्निंग का।

राजनीति का रुतबा कम हो,
धर्माध्यक्ष परे हों,

इस या उस मतांधता पर
हम सारे गर्व करें क्यों ?

शिक्षा का स्वरूप क्या हो
यह सामान्य प्रश्न ही
कार्ल मार्क्स के समक्ष था
और काल-पुरुष के अब भी।

Scanned with CamScanner

आतंक राजसत्ताओं का
अब तक पृथ्वी पर थमा नहीं।
इसलिए किसी स्वर्गाकांक्षा में
मन अपना भी रमा नहीं।
मानवीय मुक्ति का स्वप्न
हमारा भी अब तक पाथेय रहा।
स्वातंत्र्य-बोध ही शिक्षा है,
सब मनीषियों ने यही कहा !

रुपांतरित तंत्र शिक्षा का
एक परीक्षा तंत्र में हुआ,
इस क्रम में ही
लोकतंत्र भी बना
चुनाव चक्रवत् जुआ...
शिक्षा और लोक पर केंद्रित
चर्चाओं की ऊब-डूब में
शिक्षा-लोक
न बदला,
~~शि क्षा लो क~~
और भी दूर ही हुआ !

दुर्नीति मात्र बौद्धिक तो नहीं,
वह सांस्कृतिक सत्ता है,
जिसका प्रतिकार जरूरी
करती है इकॉनमी भी !

Bad policy, whichever sort, is never ever mere intellectually oriented. **it is culturally conditioned**, of which, the negation is made mandatory by economic .considerations as well!

Scanned with CamScanner

चामुंडा और डाक्यू-मेल

नई सदी का रिस्की खेल।
पहले भी यह मेल-अनमेल
करता सेक्स-रिवाल्यूशन सेल।

चामुंडा-प्रतिरोध,
लाभान्विता-विरोध,
इसी में **सम्यक् बोध**।
यही है सच्चा शोध!

Scanned with CamScanner

चुतियापा ही चुतियापा
करते रहते हैं पापा
जब तब बच्चों के।
दुविधा ही उपस्थित होती
सामने सभी सच्चों के।
मुश्किल कुछ और बड़ी ही
आकर के होती खड़ी भी
अच्छे-अच्छों के-
क्यों कर बनी हुई है
शिक्षा
कुत्सित आज, अभी भी ?

विगत नहीं साम्राज्यवाद,
वह है अब भी अवशेष।
उसकी ही तो संस्कृति-ध्वनि हैं
शिक्षा और निवेश!

माड्ल-सोशल न कोई है
सोशल-साइंस डेरिवेटिव।
डेरिवेटिव पेडागॉजी
के प्रति हम इंट्रोगेटिव।

Scanned with CamScanner

रामभक्ति का प्रमाद क्यों हो,
प्रमाद भी क्यों विरोधिता में ?
सेक्यूलर कल्चर दिखती है
कुछ-कुछ शिक्षा-विरोधिता में!

राम को बनाओ मार्क्स नहीं,
मार्क्स को मार्क्स ही रहने दो।
इतिहासबोध का भी तो कुछ
आशय अब भी तो रहने दो।
इतिहास भी है साहित्य कहीं,
साहित्य सभी इतिहास नहीं,
इस शोधवृत्ति के साथ-साथ
कुछ शेष प्रश्न भी रहने दो!

Scanned with CamScanner

इतिहास है उसका बोध भी है,
इस शोध की अपनी परंपरा।
उस परंपरा की प्रगति में है
इतिहास-बोध की परंपरा!

इतिहास-बोध आवश्यक है
फिर से इतिहास बनाने को।
लेकिन, कविता को शख्सियत
फिर से दे, वो इतिहास कहाँ ?

Scanned with CamScanner

हमको न कोई आधारशिला,
अथवा फिर, धर्मशिला चाहिए।
जो नीड हमारी है, उसको
सांस्कृतिक-
भारतीयता कहिए।
थी जद्दोजहद देश को अपने भी
~~कुछ~~ आधुनिक बनाने की,
नीड है, सदी-पूर्व का
विवेकानंदी-
स्वप्न सँजोने की !

शिक्षा क्यों रहे ? दासता की ही
पुष्टि नये भारत में भी?
अभिनव अनेक प्रस्तावों में भी
मिलता है दासत्व कहीं।
इसलिए युवा-भारत को
फिर से याद विवेकानंद आए।
युद्धोन्माद के सम्मुख हम
क्यों धर्मभीरु ही कहलाए ?

12 जनवरी, युवा दिवस

Scanned with CamScanner

शास्त्रज्ञता कभी क्या
विज्ञान-चेतना
होती ?
इस जिज्ञासा के सागर
से ही निकले कुछ मोती
हम जिसे
आधुनिकता की
अन्विति-समग्र कहते हैं,
कुछ सूत्र सभ्यता-संकट
के भी उसमें रहते हैं...

दिव भी रहे कुछ दास सा,
आकांक्षा ही यह प्रबल,
प्रेरित नये विज्ञान को
करती रही प्रत्येक प्रश्न
पर **शांतिकामी-स्वप्न** उससे
दूर ही कुछ आ पड़े,
कुछ पूर्वग्रह, दुर्-आग्रह भी
सामने आकर अड़े।
संभव करे सत्यान्वेषण,
वह नहीं प्राच्यार्थ है,
बाहर नये विज्ञान के
सत्यार्थ, भी कुछ व्यर्थ है !

28 फरवरी, विज्ञान-दिवस

Scanned with CamScanner

तीन दशकों बाद अब
महिला दिवस पर वाकया
याद हम करते नई तारीख से,
कुछ कहो, क्या ?
सुरक्षा मन की,
या मानस की,
कभी मिलती कहाँ ?
सुपरटेक्निक दासता की,
नित नई होती जहाँ !

हर समाज-सत्ता सदैव
मिलती है यदि पुरुषच्छवि में,
~~पुरुषच्छवि में,~~
उसे चुनौती देने का सामर्थ्य
कहाँ से होता कवि में ?
मनोवृत्तियों के अनुशासन को
~~अनुशासन को~~
लक्षित जो तकनीकी,
फिमेल-मेल डिवाइड को भी
निश्चित कुछ स्वरुप देती !

8 मार्च, महिला दिवस

Scanned with CamScanner

सर्च-फार-ब्यूटी की जो
शुरुआत यूक्लिड ज्यामिति में,
ग्राँ-फिनेल था उसे मिला
आइन्स्टाइनियन रति-गति में।
सिद्धि सरलता की होती अभीष्ट
सम्यक् सिद्धांत-बोध का,
करती है स्वरूप निश्चित कैसे
वह सारे स्वत्व-शोध का ?

विज्ञान-वार्ता में अगर
शामिल न मानव-मुक्ति हो,
किस साध्य को लक्षित
हमारे अन्य साधन भी, कहो ?
उपलब्धियाँ जनतांत्रिक
पिछली सदी की व्यर्थ हों-
अपने किसी आयास का
ऐसा न कोई अर्थ हो।
गर राजसत्ताएँ अभी
युद्धोन्मत्त सभी जगह,
विज्ञान-साधन-समीक्षा
की भी बनी है यह वजह !

14 मार्च, अलबर्ट आइन्सटीन

Scanned with CamScanner

बनता एप्रोच एडिशनल ही
पर्याय **समन्वय** का न कहीं।
क्यों मर्म धर्म का अब तक हम
पाते व्यतीत चिंतन में ही !
करुणा की जो अजस्र धारा
अंकित अनेक इतिहासों में,
निःशेष सिद्ध वह होती है
जब तक उदात्त परिहासों में।
नियमित, जन-संकुल जीवन-क्रम
इस विध या उस, बाधित चलता,
मिलती मतांधता व्यापक क्यों ?
यह शेष-प्रश्न भी तो रहता !

13-14 अप्रैल, समन्वय-दिवस

Scanned with CamScanner

वर्चस्व बौद्धिक-सांस्कृतिक

चैलेंज हो-यह लक्ष्य ही
रखता समयरथ चक्र को
अपनी दिशा में कुछ सही।
उपलब्धियाँ मानवकला की
~~मानवकला की~~
राशि-संचय भर नहीं,
करता अनुप्राणित उपक्रम वे
~~उपक्रम वे~~
समीक्षा-कर्म ही !

18 अप्रैल, विश्व विरासत दिवस

Scanned with CamScanner

गम गलत करने वास्ते
पढ़ना किताबों का हुआ-
ये खयाल पिछली सदी का
अब भी वही कुछ बना हुआ।
क्यों नई दुनिया का मिशन
उस बाध्यता में ही पले ?
कल्चर किताबों की
नया कुछ और ढंग लेकर चले !

बेटर बुक्स एण्ड टी-टेस्टी
हमें चाहिए थिंकिंग फ्री ।
साल नया हो या पुराना
बुक-फेयर का यही तराना !

23 अप्रैल, विश्व पुस्तक-दिवस

Scanned with CamScanner

इकोलाजिकल-

कंसिडरेशन

कुछ स्वरुप ऐसा पाए,

नई बने

विज्ञान-वार्ता, और

पर्यावरणवाद जाए।

शिक्षा की समग्र संरचना

में **विज्ञान-बोध**

कुछ हो,

पर्या-चर्या-विचारधारा को भी

अब तुम अलविदा कहो !

5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस

Scanned with CamScanner

जीवंत एक भाषा है
संस्कृत, और एक भवन भी।
परिभाषित किंतु न करती
कोई अकादेमी भी।
क्या बोध आधुनिकता का,
उससे अपेक्षा क्या है ?
और एक आधुनिक भारत
जैसा क्या एक स्वप्न भी !

संस्कृत दिवस

योग का नियम यह प्रथम –
अहिंसक हों कार्यक्रम।
शांति की हो अभिलाषा
भोग क्यों बने दुराशा ?

Scanned with CamScanner

अच्छा ही अच्छा था जब सब,
भारत आधुनिक बना था कब!
गणतंत्र बना सन् पचास में,
अब भी सेक्यूलर तलाश में
कुछ शुद्ध-बुद्धि-सम् आलोचक,
पर कहाँ विवेक-विनत मस्तक ?

गणतंत्र दिवस

Scanned with CamScanner

सूखें न स्त्रोत सद्‌भावों में,
जीवन हो भले अभावों में।
बातें कुछ कही-अनकही, पर
मन में अपने संकल्प यही-
अंतर्धार्मिकता और विवेक,
लक्ष्य भी समन्वय रहे एक !

समन्वय दिवस

सोशल-लाइफ में रोल ही यह
सोशल-साइंस का हम चाहें-
स्पोर्ट्स और एंटरटेनमेंट
शिक्षा के ही अधीन आएँ !

Scanned with CamScanner

शिक्षा और स्वातंत्र्यबोध का
रिश्ता ही केंद्रीय प्रश्न वह,
जिसके समाधान की कोशिश
में सारा समाज ही क्रमशः
लगता है अनेक कोणों से
रिजल्टेंट होता कुछ भिन्न,
शेष हमेशा ही रहता है
परिवर्तन का प्रश्न अभिन्न!

स्वाधीनता दिवस

Scanned with CamScanner

आजाद-खयाली रहे मुख्यधारा
समाज की अपने,
सिटिजन स्वतंत्र-भारत के
क्यों पालते भिन्न कुछ सपने ?
पुरुषार्थ सिद्धि के हेतु
अगर कुछ पूर्वशर्त रखते हैं,
आजाद-खयाली के भी तो
मायने वहाँ रहते हैं !

अंग्रेजों की खिदमत में
पहुँचे कुछ भारत-भीम,
कोलोनिअल प्लंडर की
बन गई नई एक टीम।
साईंस अथवा कल्चर अब तक
कर न सके कुछ फ्री
जनगण का स्पिरिट,
अभी आधा गुलाम कंट्री !

15 अगस्त, आजादी दिवस

Scanned with CamScanner

क्यों मुक्ति की आकांक्षा
पाती न समुचित रुप यहाँ ?
मुश्किल यही हर रोज ही
करते रहे हम तो बयाँ।
सेंटर में हो शिक्षाभिक्रम
अपने हर-एक आयास के,
कल्चर हमारी और ही
~~और ही~~ कुछ ढंग जिससे पा सके।
~~जिससे पा सके।~~
हीरक-जयंती वर्ष में
स्वातंत्र्य के, संकल्प यह
करके उठें हम हर सुबह,
पाने को कुछ बेहतर ही वह!
~~बेहतर ही वह !~~

15 अगस्त 2007

नहीं मंदिरों की सत्ता से
था महर्षियों का सम्मान।
होती थी इहलौकिकता से
सद्गुरुओं की भी पहचान।
अच्छा है, उस परंपरा को
याद करें हम आज, अभी।
शिक्षक-दिवस
~~नये भारत में~~
रखे मानवीय मान सभी !

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस

हिंदी हो संयुक्त-राष्ट्र में,
इससे कब एतराज हमें ?
पर स्वदेश में ही पहले
उसकी अपनी कुछ धाक जमे !
किसे **राष्ट्रभाषा** कहते हैं,
इस पर नियमित बात चले,
फ्री-थिंकिंग का भी परपज
आयासों के साथ पले !

14 सितम्बर, हिन्दी दिवस

Scanned with CamScanner

सबसे मस्त खुशी जीवन की
कुछ का बचपन होता है।
करके कुछ की याद, हमारा
दिल सपनों में खोता है।
सपना था, स्वतंत्र-भारत दे
बचपन को कुछ रुप नया।
किंतु, युद्ध-दर-युद्ध यात्रा में
वह भी सामर्थ्य गया।
बना रहे सामर्थ्य स्वप्न का,
कोशिश हो हम सारों की।
खुशियों भरा सभी का बचपन,
भले न चमक सितारों सी !

14 नवम्बर, बाल-दिवस

Scanned with CamScanner

अपनी चिंता में बचपन का
कुछ स्वरुप ऐसा आया-
मानव-मन पर **खेल-खिलौनों** का
न रहे कोई साया।
खेल हमें सिखलाते हैं क्या ?
इस पर माथापच्ची
करने से बचते आये जब,
रहीं न बातें सच्चीं।
जीवन बने खेल जैसा,
यह मकसद भी मुश्किल है,
इसीलिए **साइंस के**
फ्यूचर में ही अपना दिल है !

14 नवम्बर, बाल-दिवस

Scanned with CamScanner

स्वप्नमय संसार सारा ही रहे
बचपन हमारा।
निराशा से हम अगर
डालें नजर इतिहास पर,
और कुछ बेहतर बनाने की
तमन्ना पुरअसर
फिर दिलों में जाग जाए,
कोशिशों में आँच आए।
बने क्यों फिर-फिर
अभावों से ही बचपन बेसहारा ?

14 नवम्बर, बाल-दिवस

Scanned with CamScanner

अनिवार्यता अब तक
उसी जद्दोजहद की शेष हैं,
व्यक्ति भौतिक-संपदा का
किस तरह नियमन करें।
इस सरलतम सूत्र का भी
बोध कुछ मुश्किल बना,
नीति-निर्णय
और भी कुछ सभ्यता-क्रम में परे।
युद्ध की संस्कृति बनी
क्रम में नये विज्ञान के,
नया मानव-ज्ञान
अब तक हो सका मुमकिन नहीं।
शेष है अधिकार-चर्चा,
उसे सम्यक रुप दे
लक्ष्य से जोड़ें मही के,
बोध है समुचित यही !

10 दिसम्बर, मानवाधिकार दिवस

Scanned with CamScanner

कर्तव्य राष्ट्रीय बनी हुई ~~जब~~

जब चाटुकारिता यहाँ-वहाँ,

मानवाधिकार का सरोकार

~~का सरोकार~~

हम ले जाएँ किस ओर, कहाँ ?

कुछ और जहाँ, जो मानवाधिकार को

~~मानवाधिकार को~~

पूर्वशर्त बनने ना दे,

जनवाद-अंतरान्वित वह है।

(डिफरेंशिएटेड डेमोक्रेसी)

~~वह है,~~

जो शिक्षा को सम्यक स्वर दे !

10 दिसम्बर, मानवधिकार दिवस

Differentiated Democracy

चिरस्थायी शांति का

सपना रखा प्रभु यीशु ने,

किंतु सदियों

युयुत्सा के दायरे हमने चुने।

यह बड़ा-दिन

युद्ध के उन्माद की भी छानबीन

करने के

उद्देश्य [illegible] को ही

जाय बन निश्चय नवीन !

25 दिसम्बर

फादर-मदर, मदर-ऐज-फादर,

रोल हमेशा विवादास्पद

रहा सभ्यता-क्रम में अब तक,

~~अब तक~~

मिला नहीं कोई स्वछंद पद।

मातृ-दिवस

इस द्विधा-ग्रस्तता को

प्रापरली अंडरलाइन कर,

~~साहित्य~~

साहित्य किसे कहते हैं ?

अंडरस्टैंडिंग करे रिफाइन !

Scanned with CamScanner

प्रियतर कुछ लक्ष्य बना रखें,
अब भी हम अपने जीवन में,
यह भाव निरंतर पुष्ट हुआ,
कुछ और कहाँ रखते मन में ?
सद्गणतांत्रिकता का शोध कहीं
~~का शोध कहीं~~
नैराश्य-निशा में विलीन न हो,
इसलिए कुशिक्षा जहाँ कहीं,
है ~~कुछ~~ नैरंतर्य- विरोध कहीं !
~~विरोध वहीं !~~

व्यक्ति-पूजा के विरोधी
वस्तु पूजा में लगे जब,
वस्तु-पूजा बन गई
व्यक्तित्व का पर्याय ही कब !
बोध इसका और भी मुश्किल
हुआ है आजकल,
पोस्ट-माडर्न सामने
कुछ और भी हैराँ अकल !

Scanned with CamScanner

रामनवमी का

मुबारकबाद

हमसे लीजिए, और,

सद्गुण-साधना के

लक्ष्य से कुछ कीजिए।

कीजिए ऐसा, कि हो

वर्चस्व में इंसानियत,

और,

सद्गुण-सिद्धि का ही

लक्ष्य हो अपना सतत !

स्वार्थ-साधन ही प्रमुख कुछ

लक्ष्य जब तक है बना,

अँधेरा अज्ञान का

तब तक धरा पर है घना।

रहे फ्री-थिंकिंग समाहित

लक्ष्य में अपने सदा,

हो न **दीपोत्सव** प्रभावित

प्रमाणित किसी विध, कुछ आपदा !

रामनवमी का
मुबारकबाद
हमसे लीजिए, और,
सद्‌गुण-साधना के
लक्ष्य से कुछ कीजिए।
कीजिए ऐसा, कि हो
वर्चस्व में इंसानियत,
और,
सद्‌गुण-सिद्धि का ही
लक्ष्य हो अपना सतत !

स्वार्थ-साधन ही प्रमुख कुछ
लक्ष्य जब तक है बना,
अँधेरा अज्ञान का
तब तक धरा पर है घना।
रहे फ्री-थिंकिंग समाहित
लक्ष्य में अपने सदा,
हो न **दीपोत्सव** प्रभावित
~~प्रमापित~~ किसी विध, कुछ आपदा !

मंजिल-दर-मंजिल बना हुआ
संघर्ष **तीसरी-दुनिया** का,
जनतांत्रिकता का अब भी तो
कुछ-कुछ धूमिल सा है खाका।
सार्थकता की सब खोज राजनीतिक
जब बनी निरर्थक है,
तब **अर्थनीति** का उलटफेर ही
~~उलटफेर ही~~
रहता कुछ-कुछ सार्थक है !

Scanned with CamScanner

राष्ट्रवाद राष्ट्रीय दलों का
बना हुआ जब एक पहेली,
युक्ति कहाँ से पायेंगे हम,
पूछो तो, ऐसी अलबेली-
जो **शैक्षिक विमर्श** को
देती हो स्वातंत्र्य-बोध-मूलक स्वर,
और, अर्थ-चर्चा को रखे
पुरुषार्थों के ही अधीन कर।
टेक्नोक्रेसी की आँधी में
मूल्य मानवीय उड़ें नहीं,
परिवर्तन-आयासों से हम
इसीलिए ही जुड़े कहीं !

Scanned with CamScanner

सरोकार संस्कृति का होता हो
यदि पुष्ट पलायन से,
इस विडंबना से जीवन की
हम भी तो कुछ आज हँसे।
मनुष्यत्व की शर्त अंशतः
आत्म
~~अमर~~ विसर्जन बने कहीं,
पृथ्वी पर रचनात्मकता का
कुछ तो है वैशिष्ट्य वहीं !

7 अप्रैल

आधार भारतीय शिक्षा का हो

नान-वायलेंस, मोनोगेमी ।

~~मोनोगेमी।~~

इस लक्ष्यारक्षण में अपने हो

किसी तरफ ना कोई कमी।

हो कमिटमेंट फ्रीडम का ही जब

लर्निंग का भी मुख्य स्वर,

~~क्यों~~

क्यों ***सा विद्या या विमुक्तये***

धुन से वंचित हो कोई घर ?

Scanned with CamScanner

खबर रोजगारों की भी

बन जाती है रोजगार,
ऐसी हालत में कर सकती
क्या कोई सरकार ?
शिक्षा का उद्देश्य नहीं है
रोजगार-गारंटी।
रोजगार-मकसद,
सम्यक-शिक्षा में
अपना बंटी !

Scanned with CamScanner

अलिखित सी आचार-संहिता
सार्वजनिक जीवन की-
रखें स्वयं तक सीमित
हम सब, कुंठा अपने मन की।
और, विशेष प्रयोजन पर ही
केंद्रित करके ध्यान,
यथाशीघ्र हों
सार्वस्थल से सारे अंतर्धान।

शांति,

हमारा लक्ष्य राष्ट्रीय,
हो न प्रभावित ऐसा-
अनियंत्रित सेलफोन-यूज से
ध्वनि-प्रदूषण जैसा !

Scanned with CamScanner

शत्रुओं को क्षमा कर
और मैत्रियों को भूल जा,
अन्य एक वर्षांत पर
शुभ-कामना में ये लिखा,
वर्ष नव
कुछ लक्ष्य नवतर
दे हमारे मनों को,
भेद मित्र-अमित्र का
फिर से मिले प्रिय जनों को !

Scanned with CamScanner

RAMANAND

रामानंद

- जन्म (1951–आजमगढ़) Benares
- स्वतंत्र साहित्यकर्मी
- 1997 से वैष्णव विचारशीलता को समर्पित सक्रियता
- समकालीनता (विज्ञान/समाजकर्म) समीक्षा के छुट-पुट प्रयास
- शिक्षा एवम् साहित्य संबद्ध पुस्तकों/आलेखों के अनुवाद (हिंदी/अंग्रेजी, 1977 से)

Scanned with CamScanner